जौनाथन लिविंगस्टन सीगल

रिचर्ड बाख़

जौनाथन लिविंगस्टन सीगल
रिचर्ड बाख़
Jonathan Livingston Seagull
Richard Bach
अनुवाद : अरविन्द गुप्ता

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

रेखांकन : शर्मिष्ठा सान्याल
(रिचर्ड मुनसन के मूल चित्रों पर आधारित)
ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

पांचवा संस्करण : वर्ष 2007

मूल्य : 15 रुपये

Published by Bharat Gyan Vigyan Samiti
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket, New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773
email: bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com
Printed at Sun Shine Offset, New Delhi - 110018

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

जौनाथन लिविंगस्टन सीगल

रिचर्ड बाख़

जौनाथन लिविंगस्टन सीगल

सुबह का समय था। समुद्र की थिरकती लहरों पर सूरज की नई धूप चमक रही थी। अकेले, एकदम अकेले, एक समुद्री चील उड़ने का अभ्यास कर रही थी। सौ फीट की ऊंचाई से उसने दोनों पैरों को आपस में मिलाया, चोंच को ऊपर उठाया और हवा को चीरती हुई नीचे आई। उसकी आंखों में एक तेज़ चमक थी। वो एक मुश्किल हवाई करतब का अभ्यास कर रही थी। परंतु एक छोटी सी गल्ती के कारण उसके पंख लड़खड़ाने लगे। फिर हवा में उसका संतुलन बिगड़ा और वो एक पत्थर की तरह नीचे के समुद्र में जा गिरी। समुद्री चीलें इस तरह कभी भी नहीं गिरती हैं। उनके लिए उड़ान के दौरान, इस प्रकार गिरना, बड़ी शर्म की बात होती है।

लेकिन इस चील पर इस विफलता को कोई असर नहीं पड़ा। वो पंख पसारे उड़ान की बारीकियों का अभ्यास करती रही। वो कोई साधारण समुद्री चील नहीं थी। उसका नाम था – जौनाथन लिविंगस्टन सीगल।

ज़्यादातर समुद्री चीलें, उड़ान के बारे में बहुत थोड़ा ही जानती हैं – किनारे से खाने की जगह तक जाना और फिर वापिस आना। उड़ान में उनकी कोई खास रुचि नहीं होती है। वे केवल इसलिए उड़ती हैं जिससे कि वो खाने के स्थान तक पहुंच सकें। परंतु इस समुद्री चील की खाने में कोई रुचि नहीं थी। उसे बस उड़ने से मतलब था।

इस बात ने उसे अन्य चीलों के बीच लोकप्रिय नहीं बनाया। उसके मां–बाप भी उससे नाखुश थे। समुद्र की लहरों के समानांतर उड़ने से क्या फायदा? समय की इस फिज़ूलखर्ची से भला क्या लाभ?

"तुम दूसरी चीलों की तरह क्यों नहीं रहते, जॉन?" उसकी मां पूंछतीं, "उड़ने का काम तुम दूसरों पर छोड़ दो। तुम कुछ खाओ–पियो जॉन? देखो, तुम्हारी एकदम हड्डियां निकल आई हैं।"

उसके पिता कहते, "देखो जॉन, अब सर्दी आने वाली है और तब सतह पर रहने वाली मछलियां गहराई में चली जाएंगी। अगर तुम वाकई में कुछ सीखना चाहते हो तो मछलियां पकड़ना सीखो। माना, उड़ना एक अच्छा शौक है, पर क्या तुम उड़ान को खा सकते हो? यह मत भूलो कि हम सिर्फ खाने के लिए ही उड़ते हैं।"

जौनाथन ने अपना सिर हिलाया। कुछ दिनों तक उसने अन्य समुद्री चीलों की तरह रोटी और मछली के टुकड़ों की खातिर मछुआरों की नावों के चक्कर लगाए। परंतु, उससे यह नहीं बना।

मुझसे यह ज़लालत का काम नहीं होगा। मैं उड़ूंगा। मुझे अभी बहुत कुछ सीखना है! और कुछ देर बाद जौनाथन अकेले ही समुद्र में बहुत दूर उड़ने लगा। वो भूखा था परंतु खुश था। वो उड़ान के नए गुर सीख रहा था। वो अब किसी भी समुद्री चील से तेज़ उड़ सकता था।

हज़ार फीट की ऊंचाई से उसने अपने डैनों को पूरे ज़ोर से फड़फड़ाया और फिर नीचे की ओर गोता लगाया। बस छह सेकेंड बाद वो सत्तर मील की रफ्तार से नीचे आ रहा था। इतनी तेज़ी में संतुलन बनाए रखना कोई आसान काम नहीं था। उसने बार–बार कोशिश की। परंतु सत्तर मील की रफ्तार से ऊपर जाते समय, वो अपना संतुलन खो बैठता और समुद्र की नीली लहरों से जा टकराता। गीले पंखों को सुखाते समय वो सोचता – आखिर वो क्या करे? क्या तेज़ गति के समय वो अपने पंखों को बिल्कुल भी हिलाए–डुलाए नहीं? क्या उस समय वो बिल्कुल निर्जीव बना रहे?

अब उसने दो हज़ार फीट की ऊंचाई से गोता लगाया। पिछले सबक उसे याद थे। इस बार वो सफल हुआ। दस सेकेंड के अंदर ही वो नब्बे मील प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ रहा था। उसकी आंखों के सामने धुंधला छा गया था। उसने समुद्री चीलों के लिए तेज़ रफ्तार का एक नया रिकार्ड बनाया था! परंतु विजय केवल चंद क्षणों की ही थी। जैसे ही उसने अपने डैनों के कोण को बदला वो अपना संतुलन खो बैठा और एक पत्थर के ढेले की तरह समुद्र से जा टकराया।

रात हो चुकी थी। किसी प्रकार वो तैरता हुआ किनारे पर आया। उसका शरीर टूट रहा था। डैने दुख रहे थे।

उसके लिए असफलता का बोझ ढोना मुश्किल हो गया था। अच्छा होता, अगर वो समुद्र में ही डूब कर मर गया होता!

पानी में डुबकी खाते समय एक अजीब सी आवाज़ उसके कानों में गूंजी। मैं आखिर कर ही क्या सकता हूं! मैं सिर्फ एक समुद्री चील हूं। मैं अपनी प्रकृति की सीमाओं से बंधा हूं। अगर मैं अच्छी तरह उड़ान भरने के लिए पैदा हुआ होता तो मेरा दिमाग कुछ अलग किस्म का होता। अगर मैं तेज़ रफ्तार से उड़ने के लिए बना होता तो मेरे पंख बाज़ की तरह छोटे होते और मैं मछलियों की जगह चूहे खाता। मेरे पिता ने ठीक ही तो कहा था। मुझे उड़ने की इस मूर्ख सनक को भूल जाना चाहिए। मुझे अपने कबीले में वापिस जाना चाहिए और जो कुछ भी मैं हूं उससे संतुष्ट रहना चाहिए। मैं आखिर एक साधारण, सीमित, समुद्री चील ही तो हूं।

फिर उसने एक साधारण समुद्री चील बने रहने का निश्चय किया।

उसके मां–बाप और बाकी कुनबा भी इस बात से खुश होगा। वो एक साधारण चील की तरह उड़ता हुआ किनारे की ओर चला। वो अब उड़ना – आसमान में पंख पसारना छोड़ देगा। तब न तो कोई चुनौती होगी और न ही उसे किसी विफलता का मुंह देखना होगा।

रात हो गई थी और वो उड़ रहा था। उसे कानों में एक हल्की सी आवाज़ सुनाई पड़ी, "समुद्री चीलें कभी रात में नहीं उड़ती हैं। नहीं तो उनकी आंखें उल्लुओं की तरह बड़ी होतीं! उनके दिमाग में नक्शे होते! उनके डैने बाज़ की तरह छोटे होते!"

हवा में सौ फीट की ऊंचाई पर जौनाथन ने अपनी आंखों को झपका। उसका दुख, उसका दर्द अब रफूचक्कर हो गया। बाज़ की तरह छोटे डैने!

यही तो उत्तर है! मैं भी कितना मूर्ख हूं! उड़ते समय मुझे छोटे पंख चाहिए। तेज़ रफ्तार के समय मुझे अपने डैनों को समेट कर बंद कर लेना चाहिए और केवल छोटे पंखों पर ही उड़ना चाहिए! छोटे डैने!

वो काले समुद्र से कोई दो हज़ार फीट ऊपर उड़ा। असफलता या मौत का भय अब उसे नहीं सता रहा था। उसने अगले डैनों को अंदर की ओर मोड़ा और केवल पंखों के सिरों को हवा से टकराने के लिए छोड़ दिया। फिर उसने नीचे गोता लगाया। हवा को तेज़ी से चीरते हुए वह नीचे की ओर चला। सत्तर मील प्रति घंटा, नब्बे, एक–सौ–बीस और तेज़। एक–सौ–चालीस मील की रफ्तार भी उसके डैनों पर कोई खास ज़ोर नहीं डाल रही थी। पानी के पास उसने पंखों को थोड़ा सा मोड़ा और वो आराम से गोते में से निकल कर आसमान में चंदामामा की ओर बढ़ने लगा।

उसके दिल में एक नई उमंग जागी! अब वो बहुत खुश था। एक सौ चालीस मील प्रति घंटा! और सब कुछ नियंत्रण में! उसे खुद

विश्वास नहीं हो रहा था। दो की जगह पांच हज़ार फीट से गोता लगाने पर रफ्तार कितनी होगी? वो अचरज कर रहा था।

कुछ मिनटों पहले उसने जो कसमें खाईं थीं वो उन्हें भूल चुका था। उसे उन वायदों को तोड़ने का कोई भी दुख नहीं था। कसमें साधारण समुद्री चीलों के लिए होती हैं। पर जिसने श्रेष्ठता की चरम सीमाओं को पार किया हो उसे कसमों से क्या लेना–देना?

अथक लगन और उमंग से वो और बेहतर उड़ने का प्रयास करता रहा। अगले ही दिन उसकी रफ्तार दो–सौ–चौदह मील प्रति घंटे की थी। इतनी तेज़ रफ्तार में, एक छोटी सी गल्ती से भी उसके पंखों के चिथड़े–चिथड़े हो जाते। परंतु रफ्तार में ताकत थी, रफ्तार में खुशी थी और रफ्तार में अलौकिक सुंदरता थी।

दो–सौ–चौदह मील प्रति घंटे की रफ्तार! समुद्री चीलों के पूरे कबीले के लिए यह एक ऐतिहासिक क्षण था। परंतु जौनाथन अकेले ही अपनी सीमाओं को आगे बढ़ाता रहा। अब वो तेज़ी से जिस ओर चाहे मुड़ सकता था। अन्य चीलों के सामने अपनी सफलता का बखान करने की बजाए जौनाथन उड़ान की बारीकियों से जूझत

रहा। लूप में उड़ना, हवा में कलाबाज़ी लगाना और अन्य हवाई करतबों का वो अभ्यास करता रहा।

रात को एकदम थका–मांदा वो अपने कबीले में पहुंचा। उसे लगा कि अन्य चीलें उसके प्रयासों और रिकार्ड की सराहना करेंगी। अब जीवन में जीने के लिए कितना कुछ और था! दिन भर सड़ी मछलियों के टुकड़ों के लिए लड़ने के अलावा भी ज़िंदगी का कुछ मकसद था! अब चीलें अज्ञानता से उबर कर श्रेष्ठता की ओर बढ़ सकती थीं और अद्‌भुत कुशलताएं सीख सकती थीं। सब चीलें अब मुक्त हो सकती थीं! वो सभी उड़ना सीख सकती थीं!

समुद्री चीलों का भविष्य अब उज्जवल लग रहा था।

समुद्री चीलों ने एक आम सभी बुलाई। वह जौनाथन के आने की राह देख रहीं थीं। जौनाथन को सभा के बीच में आकर खड़ा होने को कहा गया। यह किसी भी चील के लिए बहुत बड़ी बेइज़्ज़ती की बात थी। समुद्री चीलों की पंचायत ने अपना निर्णय सुनाया: "एक दिन जौनाथन लिविंगस्टन सीगल तुम्हें अपनी गैरज़िम्मेदारी का अहसास होगा। तुमने जो कुछ भी किया वो गलत किया। हमें दुनिया में सिर्फ खाने के लिए और अधिक–से–अधिक दिनों तक ज़िंदा रहने के लिए भेजा गया है।"

पंचों को आज तक किसी भी मुजरिम ने जवाब नहीं दिया था। परंतु जौनाथन ऊंची आवाज़ में चिल्लाया, "कैसी गैर–ज़िम्मेदारी! आप ये क्या कह रहे हैं! मुझ से अधिक ज़िम्मेदार और कौन हो सकता है? मैंने तो जीवन का सही मायना ढूंढा है। ज़िंदगी के ऊंचे मकसद को खोजा है? हज़ारों सालों से हम सड़ी मछलियों के टुकड़ों के लिए लड़ते–झगड़ते आए हैं। पर अब हमारे जीवन में एक उद्देश्य है – सीखना, खोजना, बंधनों से मुक्त होना! मुझे एक मौका दीजिए।

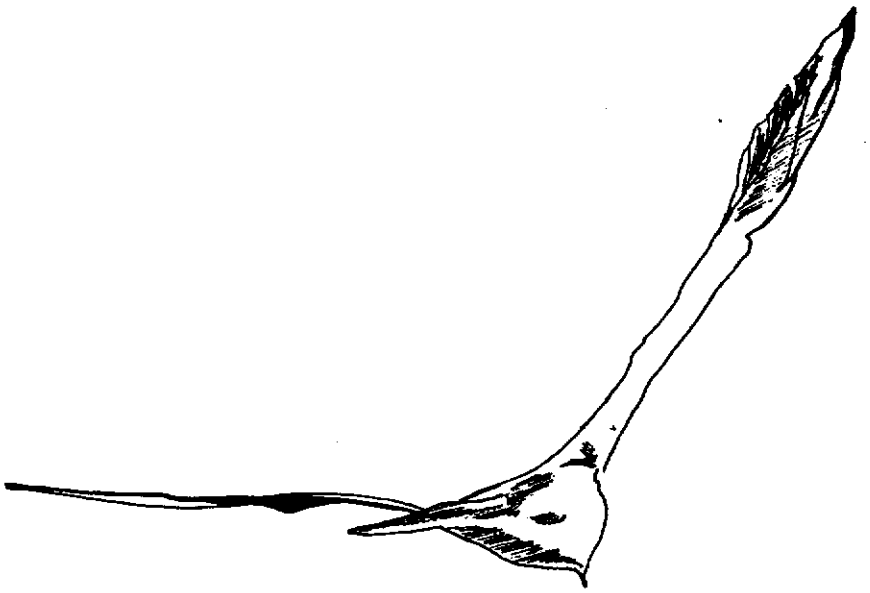

मैं आपको अपनी खोज के बारे में बताना चाहूंगा।"

सभा को जैसे सांप सूंघ गया हो। कोई भी नहीं बोला। सभा भंग कर दी गई। सभी ने अपने कान बंद कर लिए और अपनी पीठ जौनाथन की ओर कर ली।

जौनाथन अब अकेला ही रहता। अकेले रहने का उसे कोई खास दुख नहीं था। दुख था, कि बाकी चीलें उड़ान के महत्व को नहीं समझ रहीं थीं। जानबूझ कर, अपनी आंखें बंद करके वे एक सुंदर भविष्य को नकार रहीं थीं। उधर जौनाथन हर रोज़ कुछ नया सीख रहा था। अब वो पानी की सतह से दस फीट नीचे तैर रही मछलियों का शिकार भी कर सकता था। मछुआरों की नावों से फेंकी सूखी रोटी और सड़ी मछली के टुकड़ों पर अब वो निर्भित नहीं था। वो पंख पसारे ऊंचे आकाश में उड़ता और दूर–दूर की सैर करता।

वो केवल सिर्फ अपने लिए ही कुछ हासिल कर पाया था – कबीले के लिए नहीं। ऊंची उड़ाने भरने के लिए उसे जो कीमत चुकानी पड़ी थी उसका उसे कुछ दुख न था। आम चीलें भय, गुस्से और ऊब की ज़िंदगी जीती हैं। इसलिए वे जल्दी ही मर जाती हैं।

एक दिन जौनाथन ने दो समुद्री चीलों को आसमान में उड़ते हुए देखा। वे दोनों बड़ी मुस्तैदी और कुशलता के साथ उड़ रहीं थीं। जौनाथन ने उनकी परीक्षा लेने की सोची। उसने अपने पंखों के कोण को थोड़ा सा बदला जिससे वो एकदम धीमे उड़ने लगा। उन दोनों चीलों ने भी हू–ब–हू वही किया। वे भी धीमी उड़ान अच्छी तरह जानती थीं।

जौनाथन ने जब नीचे की ओर गोता लगाया तो उन दोनों ने भी उसी तरह गोता लगाया। अंत में जौनाथन को देखकर वो दोनों चीलें मुस्कुराईं और बोलीं, ''हम तुम्हारे ही कबीले के हैं जौनाथन। हम तुम्हें एक दूसरे घर में ले जाने के लिए आए हैं। यह घर बहुत ऊंचाई पर है।''

''मुझे कबीले से निकाल दिया गया है और मेरा कोई घर नहीं है,'' जौनाथन ने कहा, ''इस ऊंचाई से और ऊपर, शरीर को उठा पाना मेरे लिए संभव न होगा।''

''नहीं जौनाथन, तुम कर पाओगे। तुमने बहुत कुछ सीखा है। तुमने एक स्कूल खत्म किया है और अब दूसरे के शुरू होने की बारी है।''

जौनाथन उन दोनों चीलों के साथ ऊपर उड़ा और एक काले आसमान में खो गया।

वहां तो स्वर्ग जैसा था। पृथ्वी से ऊपर उठते समय उसका शरीर चमकने लगा था। यहां वो पृथ्वी की अपेक्षा दुगनी गति से उड़ सकता था। अब वो आराम से ढाई सौ मील प्रति घंटे की रफ्तार से उड़

सकता था। स्वर्ग में कोई सीमाएं नहीं थीं।

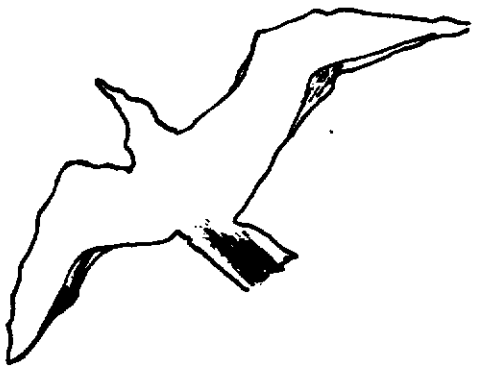

यहां पर कोई एक दर्जन चीलें होंगी। उसे वहां एकदम घर जैसा लगा। रेत पर उतरने के लिए उसे अपने पंखों को थोड़ा सा मोड़ कर ब्रेक लगाना पड़ा। बाकी चीलें, बिना अपने पंख को हिलाए ही उतर गईं। उन्हें अपने शरीर और उड़ान पर ग़ज़ब का नियंत्रण था। जौनाथन इतना थक गया था कि वो किनारे पर खड़ा–खड़ा ही सो गया।

यहां पर उसे बहुत कुछ सीखने को था। धरती और यहां पर केवल एक अंतर था।

यहां पर चीलें उसके जैसे ही सोचती थीं। उन सभी को उड़ने में असीम आनंद आता था। उनके जीवन के उद्देश्य भी एक से थे – उड़ने में पारंगत होना। वे सब–की–सब कुशल चीलें थी और वे रोज़ाना घंटों उच्च–स्तरीय उड़ान का अभ्यास करती थीं।

अपने कबीले को जौनाथन अब लगभग भूल चुका था। एक दिन उसने अपने साथी से पूछा, ''यहां इतनी कम चीलें क्यों हैं? पृथ्वी पर तो सैकड़ों–हज़ारों समुद्री चीलें थीं।''

''हज़ारों–लाखों चीलों में सिर्फ एक ही यहां तक आ पाती है। तुम उनमें से एक हो जौनाथन। हम लोगों ने न जाने कितने घाटों का पानी पिया और फिर यहां पहुंचे। तुमने एक बार में ही इतना कुछ सीख लिया। इसलिए तुम्हें यहां आने के लिए हमारी तरह जन्मों के जंजाल

से नहीं गुज़रना पड़ा।''

एक दिन रात के समय जौनाथन ने हिम्मत बटोरी और मुखिया चील के पास गया। ऐसा सुनने में आया था कि जल्द ही मुखिया इस दुनिया को छोड़ कर चला जाएगा।

''चांग..... '' उसने थोड़ा सा घबराते हुए कहा।

उस चील ने अपनी दयालु आंखों से उसकी ओर देखा और पूछा ''बोलो मेरे बेटे?'' मुखिया किसी भी चील से तेज़ उड़ सकता था। वो

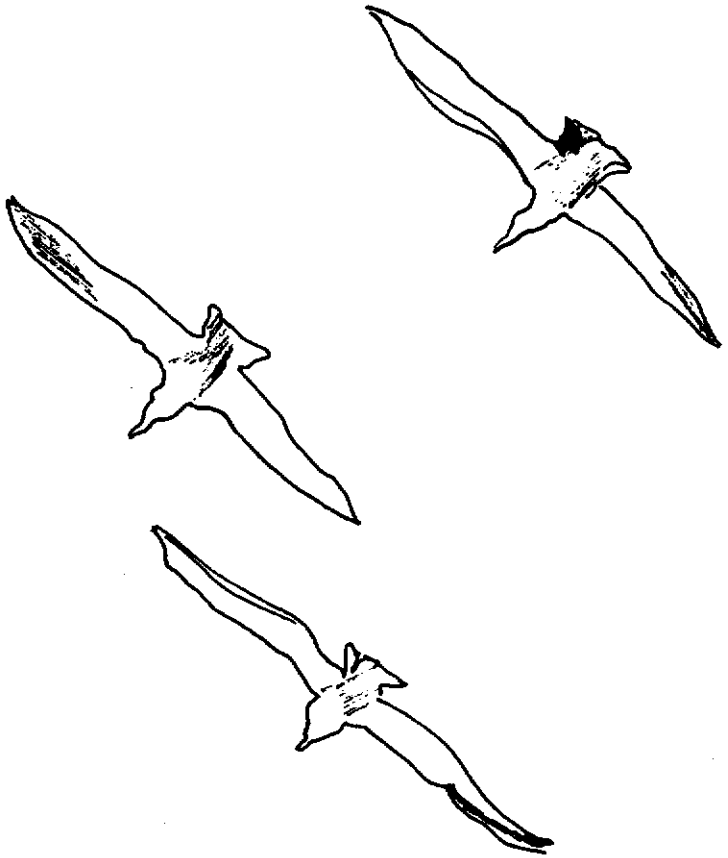

उड़ान की बारीकियों के बारे में बहुत सी बातें जानता था। औरों को उससे अभी बहुत कुछ सीखना था।

''यहां के बाद क्या होगा? हम लोग कहां जाएंगे? क्या स्वर्ग जैसी कोई जगह नहीं है?''

''वास्तव में स्वर्ग नाम की कोई जगह नहीं है जौनाथन। स्वर्ग कोई स्थान नहीं है और न ही वो कोई समय है। स्वर्ग का मतलब है परिपूर्ण होना, यानि परफेक्ट होना,'' चांग कहते–कहते एक क्षण के लिए रुका। ''तुम बहुत तेज़ रफ्तार से उड़त हो, है न?''

''मुझे तेज़ गति से उड़ने में बहुत मज़ा आता है,'' जौनाथन ने स्वीकार किया।

''जिस दिन तुम परफेक्ट स्पीड से उड़ोगे उस क्षण तुम स्वर्ग पहुंच जाओगे। और यह रफ्तार, हज़ार मील प्रति घंटा नहीं है, न ही करोड़ और न ही प्रकाश की गति के बराबर है। क्योंकि हरेक संख्या की एक सीमा होती है और परिपूर्णता यानि परफेक्शन की कोई सीमा नहीं होती। परफेक्ट स्पीड का मतलब है, बस वहां होना।''

बिना किसी इशारे या संकेत के चांग, उसी क्षण, पकल झपकते ही वहां से गायब हो गया और पानी के पास कोई पचास फीट की दूरी पर जाकर खड़ा हो गया। ''आप यह कैसे करते हैं? ऐसा करते वक्त कैसा लगता है? इससे आप कितनी दूर तक जा सकते हैं? ''

''क्या आप मुझे इस प्रकार उड़ना सिखा सकते हैं?'' जौनाथन ने पूछा। उसे इस अनजाने रास्ते पर चलने से डर लग रहा था।

''तुम चाहो तो अभी से सीखना शुरू कर सकते हो,'' चांग ने कहा।

चांग हल्के–हल्के बोल रहा था और अपने छात्र को गौर से देख

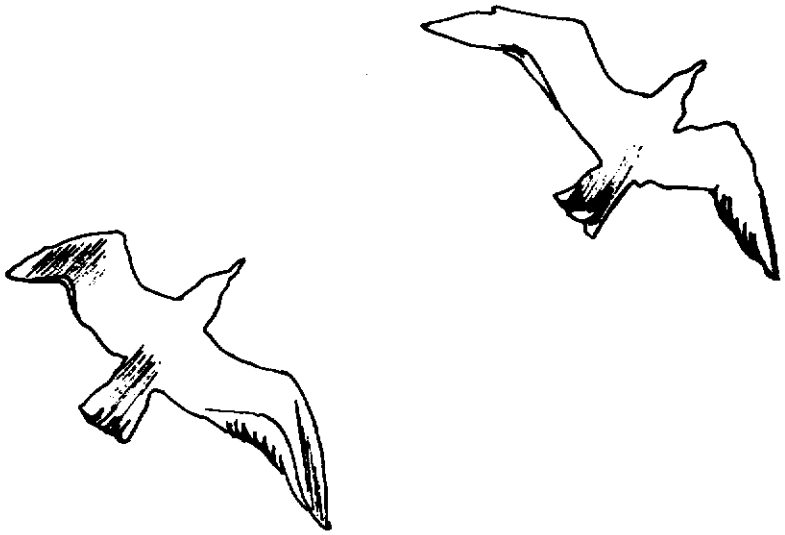

रहा था। ''अगर तुम सोच की रफ्तार से उड़ना चाहते हो,'' उसने कहा, ''तो तुम यह जान कर शुरू करो कि तुम वहां पहुंच गए हो .....।''

चांग का कहने का मतलब था – जौनाथन तुम अपने आपको इस बियालिस इंच पंखों की लंबाई वाले, सीमित शरीर में कैद मत समझो। याद रखो – तुम्हारी सच्ची प्रकृति, समय और स्थान से मुक्त है।

जौनाथन अपनी तपस्या में दिन–रात लगा रहा। फिर एक दिन, किनारे पर खड़े–खड़े जब वो आंखें बंद करके विचारों में लीन था तो उसे ऐसा लगा जैसे उसे चांग की बात समझ में आ गई हो। ''यह सच है! मैं परफेक्ट हूं, एक असीमित चील हूं!'' वो खुशी से झूम उठा।

''बहुत अच्छे,'' चांग ने कहा। उसकी आवाज़ में विजय की गूंज थी।

जौनाथन ने अपनी आंखें खोलीं। वही बूढ़ी चील के साथ किसी और तट पर खड़ा था। वहां हरे आसमान में दो पीले सूरज चमक रहे

थे।

''आखिर तुम्हें मेरी बात समझ में आ गई,'' चांग ने कहा, ''पर तुम्हें अभी कुछ और अभ्यास करना पड़ेगा।''

जौनाथन को वो जगह एकदम नई लगी। ''हम कहां पर हैं?'' उसने पूछा।

''हम शायद किसी दूसरे ग्रह पर हैं। यहां का आसमान हरा है और एक सूरज की जगह पर कोई दोहरा सितारा है,'' चांग ने शांत भाव से उत्तर दिया। नए परिवेश का उस पर कुछ भी असर नहीं हुआ।

पृथ्वी छोड़ने के बाद पहली बार जौनाथन चिल्लाया, ''वाह! यह युक्ति सचमुच में काम करती है!''

''यह तरकीब हमेशा काम करेगी। बस तुम्हें पता होना चाहिए कि तुम क्या कर रहे हो।''

उन्हें लौटते वक्त शाम हो गई थी। अन्य चीलें जौनाथन को भयत्रस्त निगाहों से देख रहीं थीं। उन्होंने उसे अभी खड़े–खड़े गायब होते हुए देखा था।

चीलों की बधाईयों को जौनाथन एक मिनट से अधिक बर्दाश्त नहीं कर सका। ''मैं यहां नया आया हूं! मुझे आपसे अभी बहुत कुछ सीखना है,'' जौनाथन ने कहा।

''मुझे इसमें कुछ शक है,'' सुलीवन नाम की चील ने कहा, ''तुम कुछ भी नया सीखने से नहीं डरते हो। मैंने तुम्हारे जैसी निडर चील पिछले दस हज़ार सालों में नहीं देखी। अब तुम सबसे मुश्किल काम करने के लिए तैयार हो। तुम अब प्यार और दया का मतलब समझने के लिए तैयार हो।''

एक महीना पलक झपकते हुए बीता और इस बीच जौनाथन ने

बड़ी तेज़ी से प्रगति की। वैसे भी वो हर बात को जल्दी पकड़ता था परंतु बूढ़ी चील के विशेष छात्र के रूप में उसने नई बातों को बहुत तेज़ी से सीखा।

फिर एक दिन चांग लुप्त हो गया। चलते समय उसके आखिरी शब्द थे, ''जौनाथन, हमेशा प्यार और दया के लिए काम करना।''

जैसे–जैसे दिन बीतते गए, जौनाथन को उस पृथ्वी की याद सताने लगी जिसे वो छोड़ के आया था। अगर वो पृथ्वी पर, यहां के ज्ञान का एक–दसवां हिस्सा भी जानता होता, तो जीवन कितना सुखमय होता! वो सोचने लगा, शायद पृथ्वी पर कोई ऐसी चील हो, जो अपने बंधनों से मुक्त होने के लिए संघर्ष कर रही हो। जो सूखी रोटी और सड़ी मछली से आगे कुछ खोज रही हो। उसके जैसे ही, न जाने कितनी और चीलों को सच बोलने के लिए कबीले ने निष्कासित किया होगा? इन विषयों के बारे में वो जितनी और गहराई से सोचता, उतना ही अधिक उसका मन पृथ्वी पर वापिस जाने को करने लगता। जौनाथन दिल से एक शिक्षक था। वो हरेक चील को उस सच्चाई की एक झलक दिखाना चाहता था जिसका आनंद उसने खुद प्राप्त किया था।

पृथ्वी पर अन्य चीलें कुछ नया सीखने के लिए तैयार होंगी, इस बात पर सुलीवन को शक था। उसने कहा, ''जॉन, बाकी चीलें तुम्हारी बात सुनेंगी, यह तुमने कैसे मान लिया? देखो एक कहावत है **– वही चील सबसे आगे का देखती है जो सबसे ऊंचा उड़ती है।**

जहां से तुम आए हो, वहां पर चीलें अभी पर ज़मीन पर ही खड़ी हैं। वे अभी भी चिल्ला रही हैं और एक–दूसरे के साथ लड़ रही हैं। वे स्वर्ग से हज़ारों मील नीचे हैं। जहां वे खड़ी हैं, वहां से तुम उन्हें स्वर्ग कैसे दिखा सकते हो? उनमें अपने पंखों के सिरों तक को देखने की काबलियत नहीं है! तुम यहीं रहो जॉन और यहां की चीलों को

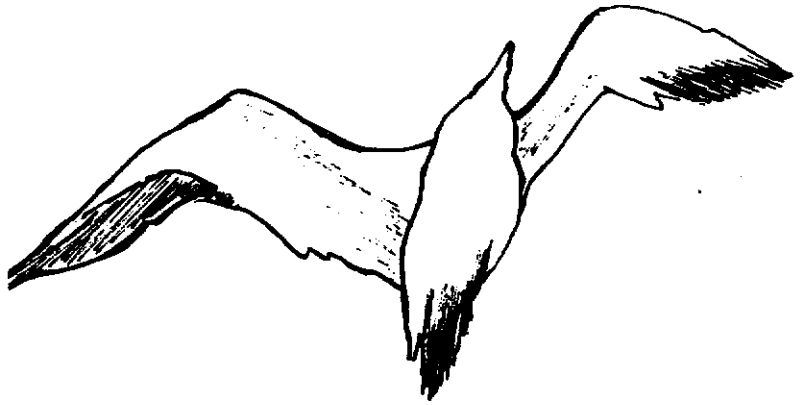

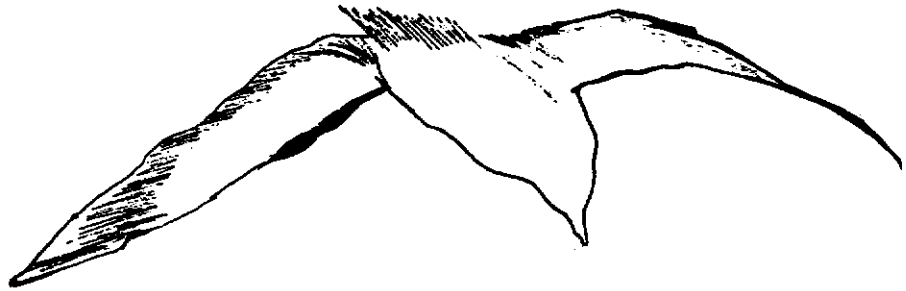

सिखाओ। ये तुम्हारी बातें समझेंगी। देखो, अगर चांग अपनी पुरानी दुनिया में चला गया होता, तो तुम्हें कौन सिखाता और तुम आज कहां होते?''

सुलीवन की बात ठीक ही थी – वही चील सबसे आगे देखती है जो सबसे ऊंचा उड़ती है।

जौनाथन ने वहीं पर नई चीलों के साथ काम करना शुरू कर दिया। वे सभी होशियार थीं और चीज़ों को जल्दी से सीखती थीं। परंतु उसे बार–बार अपनी पुरानी बातें याद आतीं। पृथ्वी पर एक–दो

चीलें अवश्य ऐसी होंगी जो कुछ नया सीखना चाहती हों। जिस दिन उसको कबीले से निकाला गया था, अगर उस दिन ही उसे चांग जैसा प्रशिक्षक मिल गया होता तो वो आज न जाने कितना कुछ और जानता होता!

"सुलीवन, मैं अब जा रहा हूं," जौनाथन ने एक दिन कहा। "तुम्हारे छात्र काफी तेज़ी से प्रगति कर रहे हैं। नई चीलों को लाने में वे तुम्हारी मदद करेंगे।"

"मुझे मालूम है कि अगर ज़मीन पर खड़ी चीलों को कोई स्वर्ग दिखा सकता है तो वो केवल जौनाथन लिविंगस्टन सीगल ही है। तुम्हारी यात्रा शुभ हो जॉन," सुलीवन ने विदाई के समय कहा।

उसके बाद जौनाथन ने केवल पृथ्वी पर अपने बड़े कबीले के बारे में सोचा। उसे मालूम था कि वो हड्डियों और पंखों के भौतिक बंधनों से मुक्त था।

फ्लेचर चील की उम्र अभी छोटी ही थी। उसके साथ बहुत बड़ा अन्याय हुआ था।

"उनकी जो मर्ज़ी चाहें कहें," उसने पहाड़ियों की ओर उड़ते हुए सोचा, "इधर से उधर पंख फड़फड़ाना भी क्या कोई उड़ना है। ऐसा तो मच्छर करते हैं! मैंने मुखिया चील के सामने एक हवाई करतब क्या लगाया, कि मुझे कबीले से ही निकाल दिया! क्या वे सबके सब अंधे हैं! क्या उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं देता? क्या उन्हें समझ में नहीं आता कि जब हम उड़ना सीख जाएंगे, तो यह हमारे कबीले के लिए कितने गर्व और सम्मान की बात होगी।"

"उनके सोच की मुझे कोई परवाह नहीं है। मैं उन्हें दिखा दूंगा कि असली उड़ान क्या होती है और फिर एक दिन वो अपनी गलती पर पछताएंगे।"

यह आवाज़ खुद उसके अपने दिमाग के अंदर से उठी। उसे सुनकर वो सहम गया।

"इतना गुस्सा न करो फ्लेचर चील। तुम्हें कबीले से निकाल कर बाकी चीलों ने खुद अपना ही नुकसान किया है। एक दिन जब वे इस सच्चाई को जानेंगे तो उन्हें अपने करे पर पछतावा होगा। उन्हें माफ कर दो और उनकी समझ बनाने में मदद करो।"

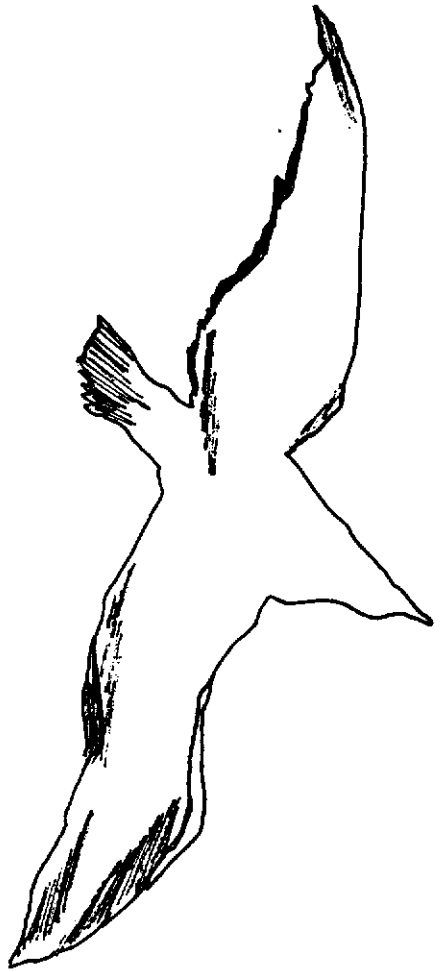

फ्लेचर के दाएं पंख से केवल एक इंच की दूरी पर दुनिया की सबसे समझदार और गुणी चील तैर रही थी। उसे अपने पंखों को हिलाने की ज़रूरत ही नहीं थी।

नौजवान फ्लेचर चील को कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था।

यह सब क्या हो रहा है? क्या मैं पागल हो गया हूं?

फिर एक हल्की सी आवाज़ उसके मस्तिष्क में गूंजने लगी "फ्लेचर चील, तुम क्या चाहते हो?"

"हां, मैं उड़ना चाहता हूं!"

''फ्लेचर अगर तुम वाकई में उड़ना सीखना चाहते हो तो वादा करो कि तुम कबीले की नासमझी को माफ कर दोगे और उन्हें नई संभावनाएं दिखाने की कोशिश करोगे।''

फ्लेचर कम उम्र का था। उसमें अहम था। परंतु वो अपने दिल की आवाज़ के सामने झूठ नहीं बोल सका।

''मैं उड़ना सीखने के लिए तैयार हूं,'' उसने हल्के से कहा।

''फिर चला फ्लेच, हम लोग पहले अभ्यास से शुरू करें,'' चमकीली चील ने कहा।

जौनाथन दूर स्थित पहाड़ियों पर, हल्के–हल्के, गोल–गोल चक्कर काटने लगा। उसका छात्र बहुत उत्साही और तेज़ था। उसके दिल में उड़ना सीखने की आग थी। फ्लेचर ने एक कठिन कलाबाज़ी लगाने की कोशिश की परंतु वो उसमें एकदम असफल रहा।

''तुम मेरे साथ अपना समय बरबाद कर रहे हो जौनाथन! मैं एकदम बेअकल हूं! मैं चाहें कितनी भी कोशिश करूं परंतु यह सब मेरे से बिल्कुल नहीं बनेगा,'' फ्लेचर ने कहा।

जौनाथन ने फ्लेचर के साथ–साथ वही कलाबाज़ी लगाई। फ्लेचर ने बड़े ध्यान से, बारीकी से जौनाथन के तरीके को देखा।

तीन महीने के अंदर जौनाथन को छह छात्र मिल गए। वे सभी कबीले से निष्कासित थे और हरेक के दिल में उड़ने की उमंग थी। उनके लिए कठिन–कठिन उड़ाने भरना आसान था, परंतु उनके पीछे के तर्क को समझना कठिन था।

''हम में से हरेक चील, स्वतंत्रता का प्रतीक है,'' जौनाथन कहता, ''और नियंत्रित उड़ान द्वारा ही हम अपनी सही प्रकृति का प्रदर्शन कर सकते हैं। जो भी चीज़ हमें सीमित करे, हमें उसे अलग हटा देना चाहिए। इसीलिए हम इतने कठिन, हवाई करतबों का अभ्यास कर

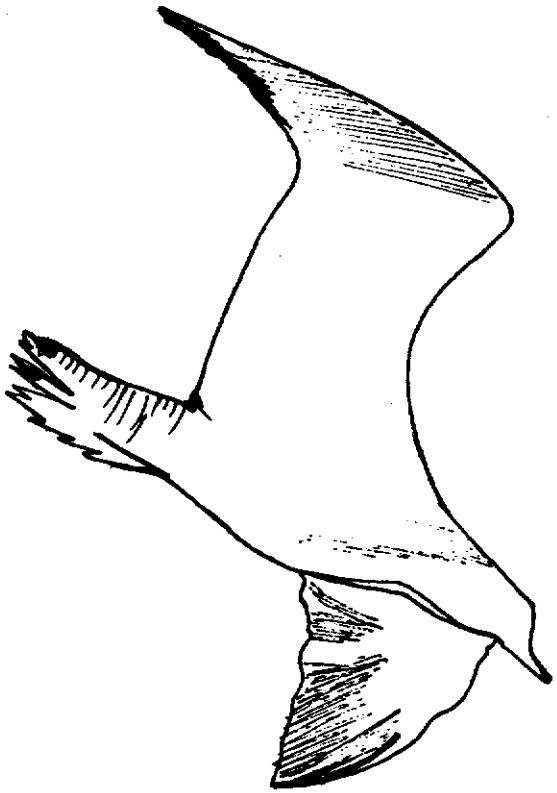

रहे हैं।''

दिन भर उड़ान की मेहनत, मशक्कत के बाद सारे छात्र थक कर पस्त हो जाते थे। उन्हें तेज़ रफ्तार और नई–नई बातें सीखने में मज़ा आ रहा था। उनमें नया सीखने की भूख बढ़ी थी। परंतु किसी को भी अभी तक यह समझ में नहीं आया था कि, पंखों और हवा की तरह ही, उड़ान का विचार भी एक असलियत थी।

''तुम्हारा पूरा शरीर, एक पंख के छोर से दूसरे पंख के छोर तक केवल एक विचार है,'' जौनाथन ने कहा, ''विचारों के बंधन तोड़ने पर ही तुम अपने शरीर की ज़जीरों को तोड़ पाओगे।'' परंतु उसकी बात किसी के पल्ले नहीं पड़ी।

एक महीने बाद जौनाथन ने कबीले मैं लौट चलने की बात कही।

''हम लोग अभी इसके लिए तैयार नहीं हैं,'' हेनरी चील ने कहा, ''वहां हमारा कौन स्वागत करेगा? हम तो वहां से निष्कासित हैं! जहां से हमें निकाला गया हो वहां हम किस मुंह से वापिस जाएं?''

छात्रों में एक अजीब सी बेचैनी थी। कबीले का एक नियम था – निकाली गई चील कबीले में कभी वापिस नहीं लौट सकती थी। इस नियम को पिछले दस हज़ार सालों में किसी ने भी तोड़ने का साहस नहीं किया था। कानून कहता था कि वापिस मत जाओ, जबकि जौनाथन कबीले में लौटने को कह रहा था। जौनाथन अब कबीले की ओर अकेली ही उड़ चला। अगर छात्र कुछ देरी और करते तो जौनाथन अकेला ही कबीले में पहुंचता।

''अगर हम कबीले का हिस्सा नहीं हैं, तो हम उसके नियम–कानूनों का भी पालन क्यों करें?'' फ्लेचर ने अन्य चीलों से कहा, ''पर अगर वहां कुछ लड़ाई–झगड़ा हुआ तो शायद हम जौनाथन के कुछ काम आ सकें।''

फिर उन आठों चीलों ने पश्चिम की ओर उड़ान भरी। सभी के पंख एक–दूसरे से लगभग छू रहे थे। जौनाथन सबसे आगे था। फ्लेचर दाएं था और कैलविन बाईं तरफ था। एक–सौ–पैंतीस मील प्रति घंटे की रफ्तार से चीलों का यह काफिला कबीले के ऊपर से गुजरा।

कबीले की साधारण चीलों का चीखना–चिल्लाना एकदम बंद हो गया। आठ हज़ार चीलें, बिना पलक झपके, इस अद्‌भुत नज़ारे को टकटकी लगाए देखती रहीं। आठों चीलों ने हवा में एक पूरी कलाबाज़ी लगाई और फिर बिना पंख फड़फड़ाए, बिना किसी प्रयास के, रेत पर अपने पैर टिकाए। काफिला इस प्रकार उतरा, जैसे इस तरह के करतब उनके लिए एक आम बात हों।

कबीले में, नई चीलों के आने की बात, आग की तरह फैल गई। इन चीलों को तो कबीले से निकाला गया था! फिर ये कैसे वापिस आईं! कबीले की चीलों को कुछ समझ में नहीं आ रहा था। शायद इसीलिए लड़ाई की आशंका टल गई।

''ठीक है, यह सभी चीलें निष्कासित हैं, 'रेत पर खड़ी एक नौजवान चील ने कहा, ''परंतु यह समझ में नहीं आता है कि इन्होंने इतने ग़ज़ब के तरीके से उड़ना कहां से सीखा?''

कबीले के मुखिया ने आदेश दिया: इन चीलों से कोई भी बात न करे। जो भी उनसे बात करेगा उसे भी कबीले से निकाल दिया जाएगा। जो चील निष्कासित चीलों को देखेगी वो भी कबीले के नियमों का उल्लंघन करेगी।

तमाम चीलों ने अपनी पीठ जौनाथन की ओर घुमा दी, परंतु जौनाथन ने उसे अनदेखा किया। उसने कबीले के सामने अपने छात्रों की उड़ान का अभ्यास ज़ारी रखा। वो छात्रों को और बेहतर प्रयास करने के लिए प्रेरित करता रहा।

''मार्टिन,'' वो अपने एक छात्र पर चिल्लाया, ''तुम कहते हो कि तुम्हें धीमी गति की उड़ान आती है। पर जब तुम उसे करके सिद्ध नहीं करोगे, तब तक तुम्हारा ज्ञान पक्का नहीं होगा। इसलिए उड़ कर दिखाओ।''

अपने प्रशिक्षक की बात पर छोटी मार्टिन चील को आश्चर्य हुआ। धीमी उड़ान के करतब जब उसने सबके सामने करके दिखाए, तो उसे खुद अपनी क्षमता पर ताज़्जुब हुआ। एकदम हल्की हवा में भी वो, बिना डैने फड़फड़ाए, रेतीले तट से, बादलों तक उठ जाती और फिर नीचे आ जाती।

इसी प्रकार चार्ल्स रोलेंड नाम की चील ऊंची पर्वतीय हवा की गोद में चौबीस हज़ार फीट की ऊंचाई पर उड़ी और खुशी–खुशी वापिस लौटी। अगले दिन उसने और ऊंची उड़ान भरने की कसम खाई। फिर फ्लेचर ने हवाई कलाबाज़ियों के अनूठे प्रदर्शन दिखाए। उसके सफेद पंख सूरज की रोशनी में चमचमा रहे थे। रेत पर खड़ी अनेक

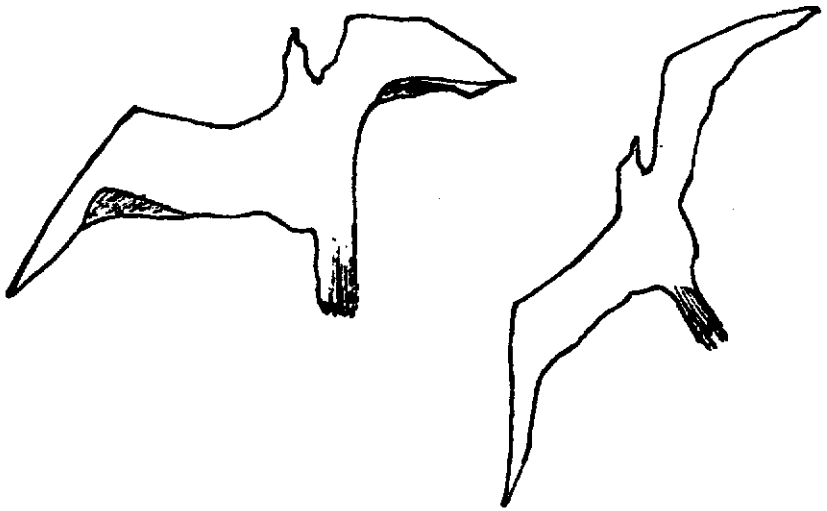

चीलें, आंखें बंद होने के बावजूद उसे ताक रहीं थीं।

जौनाथन अपने छात्रों के साथ ही रहता था। वो उन्हें नए करतब दिखाता, तकनीकों की बारीकियां समझाता, सुझाव देता, उन पर दबाव डालता और उन्हें प्रोत्साहित करता। वह अपने छात्रों के साथ, काली तूफानी रातों में भी उड़ने का अभ्यास करता। कबीले की बाकी चीलें, बस रेत पर, एक–दूसरे से सटी खड़ी रहतीं।

उड़ान का अभ्यास खत्म होने के बाद सारे छात्र रेत पर आराम करते और ध्यान से जौनाथन की बातें सुनते। उसकी कुछ बातें तो उनके सिर के ऊपर से निकल जातीं, परंतु कुछ बातें ऐसी थीं जो उनकी समझ में एकदम आ जातीं।

रात के समय इन छात्रों के पास कबीले की कुछ साधारण चीलें चली आतीं। ये उत्सुक चीलें रात के अंधेरे में सब बातों को बड़े ध्यान से सुनतीं। अंधेरे के कारण कबीले का कोई सदस्य उन्हें देख भी नहीं सकता था। सुबह होने से पहले ही ये चीलें, कबीले में जाकर मिल जाती थीं।

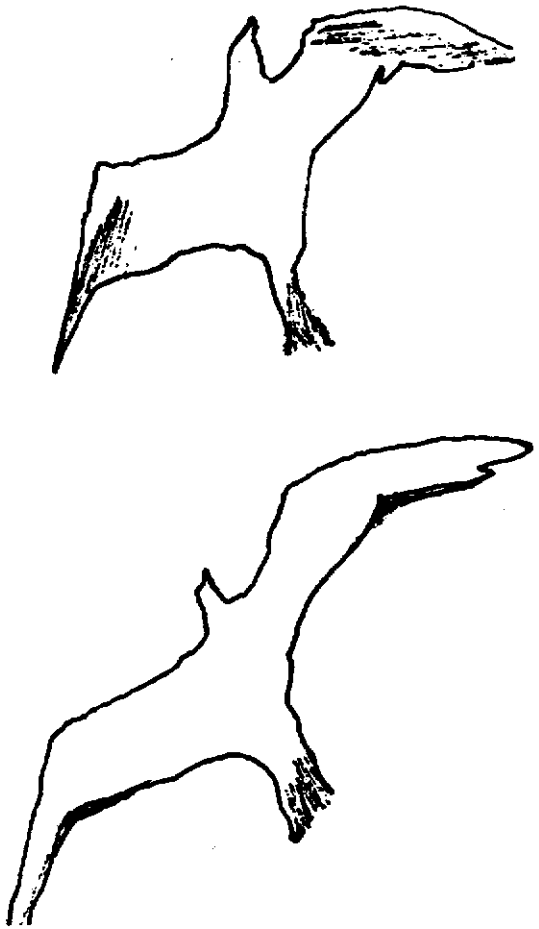

एक महीने बाद कबीले में से एक चील बाहर निकली और उसने उड़ना सीखने की अपनी इच्छा व्यक्त की। इस कदम के कारण, टेरीन्स चील भी, कबीले से निष्कासित कर दी गई। वो जौनाथन की आठवीं छात्र बनी।

अगली ही रात कबीले की एक और सदस्य, किर्क मेनार्ड नाम की चील रेत पर लड़खड़ाती हुई, जौनाथन के पास आई और उसके पैरों

के पास आकर गिर गई। "मेरी सहायता करो," उसने हल्की सी आवाज़ में कहा, "मुझे जीवन में उड़ना सबसे अधिक पसंद है।"

"अभी चलो," जौनाथन ने कहा, "मेरे साथ ज़मीन से उठो। हम अभी शुरू करते हैं।"

"तुम समझते नहीं हो। मैं अपने पंखों को हिला भी नहीं सकती।"

"मेनार्ड चील, तुम अब जीवन जीने के लिए मुक्त हो। तुम अपने सच्चे अस्तित्व को अभी साकार कर सकती हो। कोई भी बाधा तुम्हें रोक नहीं सकती है। यही चीलों का सच्चा और शाश्वत नियम है।"

"तुम कह रहे हो कि मैं उड़ सकती हूं।"

"मैं सिर्फ इतना कहा रहा हूं कि तुम स्वतंत्र हो।"

फिर बिना किसी प्रयास के, किर्क मेनार्ड चील ने, अपने पंख पसारे और रात के आसमान में विलीन हो गई । पांच सौ फीट ऊपर वो खुशी से चिल्लाई, "मैं उड़ सकती हूं! सुनो! मैं उड़ सकती हूं!" उसके क्रंदन से कबीले की सारी चीलें जाग गईं।

सुबह के समय, छात्रों के गोले के बाहर कोई एक हज़ार साधारण चीलें खड़ीं थीं। सभी मेनार्ड को उत्सुकता से देख रही थीं। उन्हें अभी इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि कोई उन्हें देख रहा है या नहीं। वे सभी जौनाथन की बातें सुन रहीं थीं और उन्हें समझने की कोशिश कर रहीं थीं।

जौनाथन की बातें एकदम सरल थीं – उड़ना हरेक चील का जन्मसिद्ध अधिकार है, बंधनों से मुक्त होना हरेक चील की प्रकृति में निहित है। इस स्वतंत्रता में जो भी बाधा आए उसे दूर करो – चाहें वो परंपरा हो, अंधविश्वास हो या फिर वो कोई और अड़चन हो।

"और चाहें वो, कबीले के नियम ही क्यों न हों," भीड़ में से एक

आवाज़ आई।

''सच्चा नियम वही है जो स्वतंत्रता की ओर ले जाए,'' जौनाथन ने कहा।

''हम तुम्हारे जैसे कैसे उड़ सकते हैं?'' एक और चील ने पूछा, ''तुम तो विशेष हो, बेहद कुशल हो, भगवान का रूप हो, सब चीलों से ऊपर हो।''

''देखो फ्लेचर को! लावेल को! चार्ल्स रोलेन्ड को! क्या ये भी विशेष हैं, कुशल हैं और भगवान का रूप हैं? ये भी तुम्हारे जैसे ही हैं, मेरे जैसे ही हैं। तुम में और इनमें बस एक ही अंतर है। इन्होंने अपनी सही प्रकृति को समझा है और अभ्यास करना शुरू किया है।''

हर रोज़ भीड़ बढ़ती गई। कुछ सवाल पूछते, कुछ पूजा करते, तो कुछ नफरत भरी निगाहों से देखते। कुछ लोग कहते कि जौनाथन महान चील का पुत्र है। कुछ कहते कि वो अपने समय से हज़ारों साल आगे है।

काफी सोचने के बाद जौनाथन ने कहा, ''इस तरह की उड़ान चीलों ने हमेशा ही भरी हैं। कोई भी थोड़ा सा प्रयास करके उन्हें सीख सकता है। इनका समय और काल से कोई संबंध नहीं है।''

हफ्ते भर बाद एक घटना घटी। फ्लेचर एक छात्र को तेज़ रफ्तार के कुछ गुर दिखा रहा था। उसने सात हज़ार फीट की ऊंचाई से गोता लगाया। वो रेत से कुछ इंच ऊपर था कि अचानक, एक नौजवान चील ठीक उसी रास्ते में आ गई। उसे बचाने की कोशिश में, फ्लेचर जल्दी से बाएं को मुड़ा और दो सौ मील प्रति घंटे की रफ्तार से एक पत्थर की पहाड़ी से जा टकराया।

उसे लगा जैसे वो कठोर पहाड़ी एक दूसरी दुनिया का दरवाज़ा

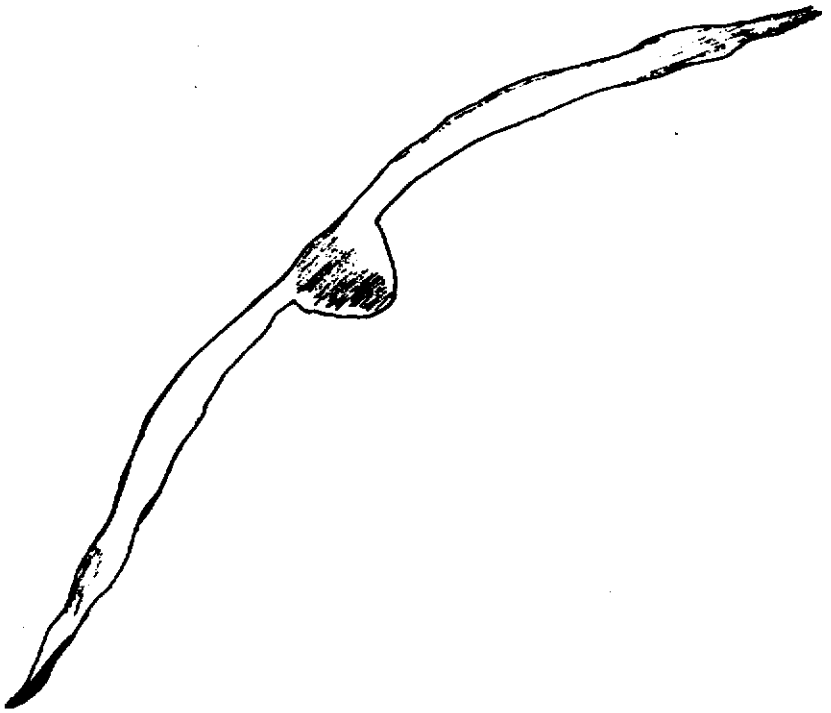

हो। टकराते समय वो भयत्रस्त था, परंतु अब वो एक नए आसमान में तैर रहा था। उसे जौनाथन के शब्द याद आए, ''हम धीरे–धीरे करके अपनी सीमाओं पर काबू पाएंगे। थोड़ा अभ्यास करने के बाद ही हम पत्थर में से उड़ना सीखेंगे।''

''तुम यहां क्या कर रहे हो, जौनाथन?'' वो पहाड़, वो पत्थर, वो टक्कर, क्या मैं मरा नहीं?''

''सोचो तो फ्लेचर। अगर तुम मुझ से बातचीत कर रहे हो, तो तुम मरे नहीं हो सकते। तुमने टक्कर के समय अपनी चेतना के स्तर को जल्दी से बदल दिया। तुम अब इस ऊंचे स्तर पर रह कर ही सीख सकते हो। अगर तुम चाहो तो कबीले में फिर से वापिस आकर काम कर सकते हो,'' जौनाथन ने कहा।

"मैं वापिस आना चाहता हूं," फ्लेचर ने कहा, "मैंने अभी–अभी कुछ नए छात्रों के साथ काम करना शुरू किया है।"

"जैसी तुम्हारी मर्ज़ी, फ्लेचर। देखो, हमारा शरीर केवल एक विचार भर है।"

फ्लेचर ने अपना सिर हिलाया और अपने पंखों को सीधा किया और पहाड़ी के नीचे अपनी आंखें खोलीं। फ्लेचर को देख, पूरा का पूरा कबीला वहां इकट्ठा हो गया।

"देखो, वो ज़िंदा हो गया! वो जो मर गया था, वो अब उड़ रहा है!"

"महान चील के पुत्र ने उसके पंखों को छूकर उसे नया जीवन दिया है।"

"नहीं! वह इस बात से मना कर रहा है! वो शैतान है! शैतान हमारे कबीले को बरबाद करने आया है!"

अब तक चार हज़ार चीलों की भीड़ जमा हो गई थी। शैतान! शैतान! की आवाज़ें चारों ओर गूंजने लगीं।

"अगर हम यहां से निकल चलें तो क्या तुम्हें अच्छा लगेगा, फ्लेचर," जौनाथन ने पूछा।

"हां, अच्छा लगेगा....." फ्लेचर ने कहा।

उसी क्षण वे दोनों भीड़ से आधा मील दूर खड़े थे। भीड़ की चमकती हुई चोंचों ने जब उन्हें नोचना चाहा तो वहां केवल खाली हवा थी।

"ऐसा क्यों?" जौनाथन सोचने लगा, "चीलों को यह समझा पाना कि वे मुक्त हैं, स्वतंत्र हैं और वे अभ्यास के बाद उड़ना सीख सकती हैं, क्यों इतना कठिन है?"

सुबह तक भीड़ अपनी बर्बरता भूल चुकी थी। परंतु फ्लेचर उस

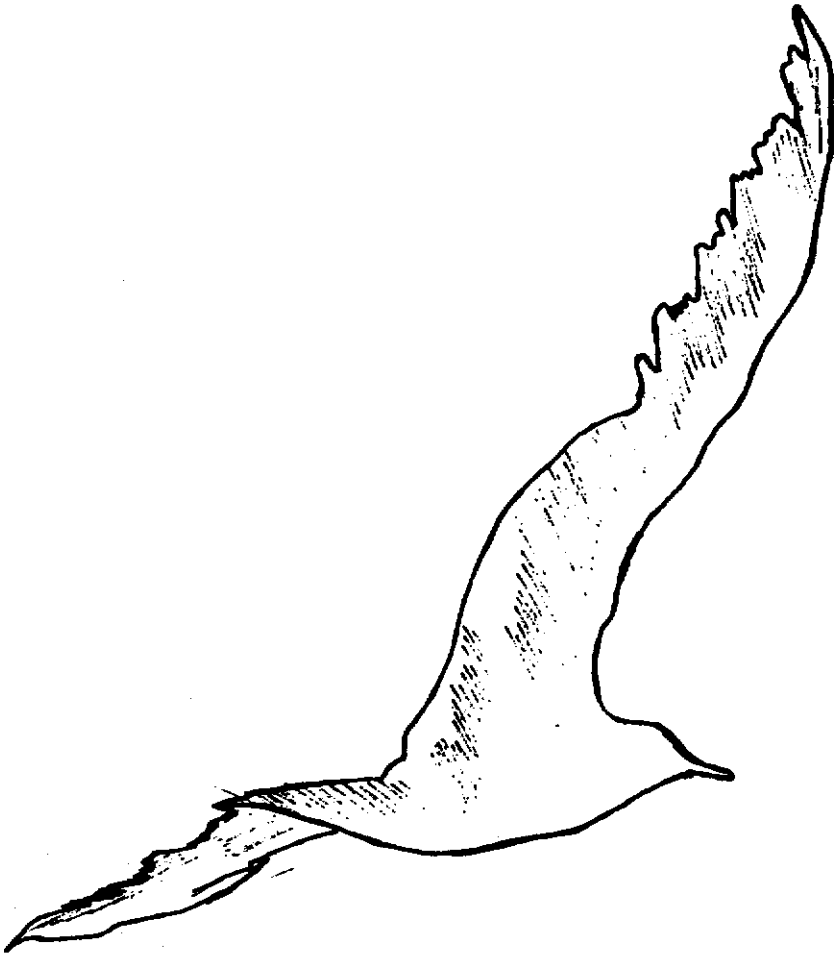

घटना को नहीं भूला था। ''जौनाथन, तुमने हमें कबीले से प्यार करना सिखाया। उन्हें एक नया सपना दिखाया। परंतु, तुम ऐसी चीलों को कैसे प्यार कर सकते हो जो तुम्हें जान से मार डालने की कोशिश करें?''

''फ्लेचर, तुम्हें अभ्यास से हरेक चील की अच्छाईयों को देखना होगा और उन्हें खुद उनकी अच्छाईयों को दिखाना पड़ेगा। प्यार से मेरा यही मतलब था। तुम एक बार इसे सीख लोगे तो इसमें तुम्हें बड़ा मज़ा आएगा।''

''मुझे एक चील की याद है। नाम था उसका, फ्लेचर। उसे कबीने ने निकाल दिया था। उसने इस नरक में संघर्ष करके अपने लिए एक स्वर्ग बनाया। अब वो अपने पूरे कबीले को वही रास्ता दिखा रहा है।''

फ्लेचर की कुछ समझ में नहीं आया। उसने भयभीत निगाहों से जौनाथन से पूछा, ''मैं कबीले का लीडर? क्या मतलब? तुम यहां के प्रशिक्षक हो? तुम हमें छोड़ कर नहीं जा सकते!''

''मैं क्यों नहीं जा सकता? न जाने ऐसे कितने और कबीले होंगे, और कितने ऐसे फ्लेचर होंगे, जिन्हें इस फ्लेचर से कहीं अधिक, एक प्रशिक्षक की ज़रूरत हो? जिन्हें कुछ प्रकाश की आवश्यकता हो?''

''मैं? जौनाथन, मैं एक साधारण सी चील हूं और तुम एक.....।''

''और मैं उस महान चील का पुत्र हूं,'' जौनाथन ने कहा, ''तुम्हें अब मेरी बिल्कुल भी ज़रूरत नहीं है। तुम्हें, बस अब अपने आप को खोजना है। अपने अंदर की असीमित, फ्लेचर समुद्री चील को पहचानना है। वही तुम्हारी असली प्रशिक्षक है। तुम उसे समझो और अभ्यास करो।''

एक क्षण बाद जौनाथन का शरीर हवा में थोड़ा थिरका और फिर एकदम पारदर्शी हो गया। ''मेरे बारे में अफवाहें मत फैलाना और न ही मुझे भगवान बनाना। मैं बस एक समुद्री चील हूं और मुझे उड़ना पसंद है।''

''जो तुम अपनी आंखों से देख रहे हो उसपर विश्वास मत करना, फ्लेचर। आंखें केवल सीमाएं ही दिखातीं हैं। अपनी समझदारी से

देखो। जो कुछ तुम जानते हो उसे ढूंढो, और तुम्हें अपने आप राह मिल जाएगी।''

शरीर का थिरकना अब बंद हो गया था। जौनाथन शून्य में विलीन हो गया था।

कुछ देर बाद फ्लेचर आसमान में उड़ा। उसे छात्रों का एक बिल्कुल नया समूह मिला। वे सभी सीखने को तत्पर थे।

''तुम्हें पहले यह समझना है,'' उसने अपनी भारी आवाज़ में कहा,

''कि हरेक चील, असीमित स्वतंत्रता और मुक्ति का प्रतीक है। हरेक चील उस महान चील का ही स्वरूप है। तुम्हारा पूरा शरीर – पंख के एक छोर से लेकर दूसरे तक, तुम्हारे विचारों के अलावा कुछ भी नहीं है।'' नौजवान चीलों को अपने प्रशिक्षक की बात कुछ समझ में नहीं आई।

''चलो, अब पहले सबक से शुरू करें,'' फ्लेचर ने कहा। यह कहते हुए फ्लेचर को अपने मित्र की ईमानदारी समझ में आई। उसमें भी वही महान आत्मा थी जो उसके मित्र में थी।

''कोई सीमा नहीं है, कोई बंधन नहीं है, जौनाथन,'' उसने सोचा, ''वो समय दूर नहीं जब मैं शून्य में से प्रकट होकर तुम्हें उड़ान के बारे में एक–दो नई बातें बताउंगा।''

फ्लेचर अब मुस्कुरा रहा था। उसे अपने छात्रों के साथ बड़ा मज़ा आ रहा था।

❐❐❐